अध्याय - 10

अंग्रेजी शासन एवं शहरी बदलाव

पाठ 3 में आपने पढ़ा कि किस प्रकार भारत में अंग्रेजी सत्ता की स्थापना के बाद गाँवों का जीवन बदल गया। मगर अंग्रेजों का शासन तो सभी जगह था– शहरों में भी – तो वहां भी कुछ परिवर्तन जरूर आया होगा। इसी बात को हम इस पाठ में समझने का प्रयास करेंगे और देखेंगे कि औपनिवेशिक भारत में 'शहरीकरण' की प्रक्रिया कैसी थी और इस समय शहरों एवं कस्बों में लोगों का जीवन किस प्रकार का था।

लेकिन इससे पहले कि हम औपनिवेशिक काल में शहरों के विकास की खोज करें, हमें अंग्रेजी शासन के पहले के शहरों पर एक नजर डालनी चाहिए। शहर सामान्यतः ग्रामीण इलाकों से काफी अलग होते थे। यहां की आर्थिक गतिविधियां और संस्कृतियां गाँवों से काफी भिन्न होती थीं। आप यह जानते हैं कि गाँव के लोगों का मुख्य काम खेती होता है जबकि शहरों में खेती का काम नहीं के बराबर होता है। यहां कई अन्य तरह के व्यावसाय किए जाते हैं। शहरों में व्यापारी, शिल्पकार, शासक तथा अधिकारी रहते थे। अक्सर शहरों की किलेबंदी की जाती थी, जो ग्रामीण क्षेत्रों से इसके अलगाव को चिह्नित करती थी। शहरों का ग्रामीण जनता पर प्रभुत्व होता था और वे खेती से प्राप्त करों और अधिशेष के आधार पर फलते–फूलते थे।

सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में मुगलों द्वारा बसाये गए शहर जनसंख्या के जमाव, विशाल भवनों और शहरी समृद्धि के लिए प्रसिद्ध थे। आगरा, दिल्ली, लाहौर जैसे शहर मुगल प्रशासन और सत्ता के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। इन केन्द्रों में सम्राट और अमीर (उच्च अधिकारी) जैसे कुलीन वर्ग की उपस्थिति के कारण वहाँ कई प्रकार की विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करने वाले लोग निवास करते थे। शिल्पकार कुलीन वर्ग के लिए विशिष्ट हस्तशिल्प का उत्पादन करते थे। ग्रामीण क्षेत्रों से शहर के निवासियों के लिए अनाज लाया जाता था। सम्राट एक किलेबंद

महल में रहता था और नगर एक दीवार से घिरा होता था, जिसमें अलग–अलग दरवाजों से आने–जाने का रास्ता होता था। किलेबंद शहरों के भीतर उद्यान (बाग–बगीचे), मंदिर, मस्जिद, मकबरे, विद्यालय, बाजार तथा सरायें बनी होती थीं।

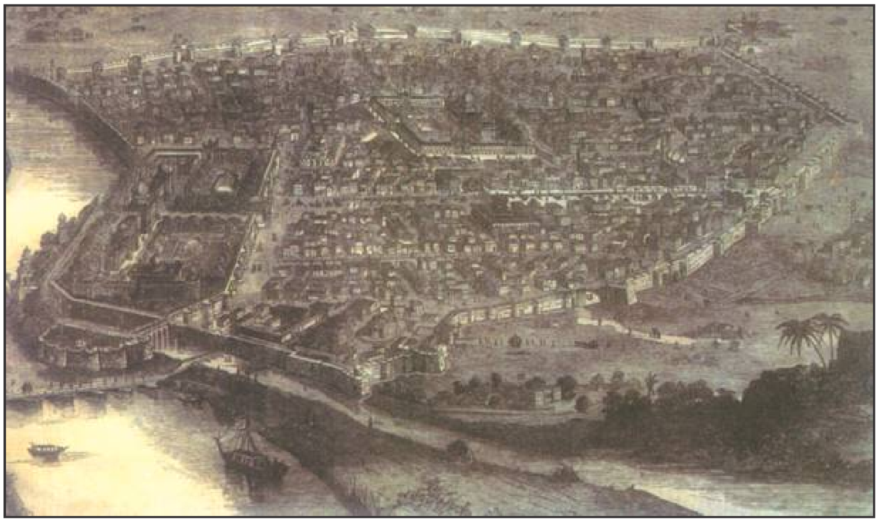

fp= 1 & mUuhloh lnh d e/; e 'kkgtgkukckn dh rlohjA
vki ckb vkj ykyfdyk n[k ldr gA 'kgj dk ?kju okyh nhokjk dk /;ku l n[kA chpkchp pknuh pkd dk e[; jkLrk fn[kkb n jgk gA nf[k, fd ;euk unh ykyfdy l lVdj cg jgh gA vc bldk jkLrk cny x;k gA tgk uko fdukj dh vkj c< jgh g ml vc nfj;kxt dgk tkrk gA

मध्य काल में इन प्रशासनिक शहरों के अतिरिक्त दक्षिण भारत में मदुरई, तंजावूर, कांचीपूरम जैसे कुछ ऐसे शहरी केन्द्र थे जो अपने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध थे। लेकिन ये शहर उत्पादन और व्यापारिक गतिविधियों के भी प्रमुख केन्द्र थे। धार्मिक त्योहारों के अवसर पर यहां मेले का आयोजन किया जाता था, जिससे तीर्थ और व्यापार जुड़ जाते थे।

'kgjh dsUnzksa esa ifjorZu

अठारहवीं सदी में शहरों की स्थिति में बदलाव आने लगा। राजनीतिक तथा व्यापारिक गतिविधियों में परिवर्तन के साथ पुराने शहर पतनोन्मुख हुए और नए शहरों का विकास होने लगा। मुगल सत्ता के धीरे–धीरे कमजोर होने के कारण शासन से संबद्ध शहरों का पतन होने लगा। नई क्षेत्रीय शासन केन्द्र–लखनऊ, हैदराबाद, श्रीरंगपट्टनम्, पूणा, नागपुर, बड़ौदा आदि नये शहरी केन्द्रों के रूप में स्थापित होने लगे। व्यापारी, शिल्पकार, कलाकार, प्रशासक तथा अन्य विशिष्ट सेवा प्रदान करने वाले लोग इन नये शासन केन्द्रों की

ओर काम तथा संरक्षण की तलाश में आने लगे। व्यापारिक व्यवस्था में परिवर्तन के कारण भी शहरी केन्द्रों में बदलाव के चिन्ह देखे गये। यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों ने मुगल काल में ही विभिन्न स्थानों पर अपने व्यापारिक केन्द्र स्थापित किए, जैसे पुर्तगालियों ने गोवा में, डचों ने मछलीपट्टनम् में, अंग्रेजों ने मद्रास (चेन्नई) में, फ्रांसीसियों ने पांडिचेरी (पुदुचेरी) में। व्यापारिक गतिविधियों में विस्तार के कारण इन व्यापारिक केन्द्रों के आस–पास शहर विकसित होने लगे।

अठारहवीं सदी के अंत में परिवर्तन का एक नया दौर आरंभ हुआ। जब व्यापारिक गतिविधियाँ अन्य स्थानों पर केन्द्रित होने लगीं तब पुराने व्यापारिक केन्द्र और बंदरगाह अपना महत्व खोने लगे। खास प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करने वाले शहर इसलिए पिछड़ने लगे क्योंकि उनकी मांग धीरे–धीरे घटने लगी। अंग्रेजों द्वारा स्थानीय शासकों पर विजय के कारण भी क्षेत्रीय सत्ता के पुराने केन्द्र नष्ट होने लगे और सत्ता के नये केन्द्रों का विकास होने लगा। 1757 ई. में पलासी के युद्ध के बाद जैसे–जैसे अंग्रेजों ने राजनीतिक नियंत्रण स्थापित किया और अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापार फैलने लगा तब मद्रास (चेन्नई), कलकत्ता (कोलकाता), बम्बई (मुम्बई) का महत्व 'प्रेसिडेंसी शहर' के रूप में उभरा। नए भवनों और संस्थानों का विकास हुआ तथा शहरों को नये तरीकों से व्यवस्थित किया गया। नए रोजगार विकसित हुए और लोग शहरों की ओर आने लगे।

mtMr 'kgj

बंगाल में भागीरथी नदी के तट पर स्थित मुर्शिदाबाद रेशमी वस्त्रों के उत्पादन के प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरा था। लेकिन अठारहवीं सदी के दौरान शहर पहले की अपेक्षा विस्तार एवं महत्व की दृष्टि से सिकुड़ गया, क्योंकि वहाँ के बुनकर इंग्लैंड की मिलों से बनकर आए सस्ते कपड़ों के साथ प्रतियोगिता में टिक नहीं सके। यही हाल ढाका का भी हुआ, जो मलमल कपड़े के उत्पादन का केन्द्र था। इसी तरह सूरत एवं मछलीपट्टनम भी सूती वस्त्र के व्यापार का केन्द्र तथा बंदरगाह शहर थे। अठारहवीं सदी के अंत में जब व्यापार बंबई, मद्रास, कलकत्ता के नए बंदरगाहों पर केन्द्रित होने लगा तब ये शहर अपना व्यापारिक महत्व और समृद्धि खो बैठे। बिहार के संदर्भ में मुंगेर, भागलपुर आदि शहरों के उजड़ने की स्थिति की समकालीन ईरानी यात्री अहमद बहबहानी ने विस्तार से चर्चा की है।

1853 ई. में रेलवे की शुरुआत हुई। प्रत्येक रेलवे स्टेशन कच्चे माल का संग्रह केन्द्र और आयातित वस्तुओं का वितरण बिन्दु बन गया। रेलवे के विस्तार के बाद रेलवे वर्कशॉप और रेलवे कॉलोनियों की स्थापना शुरू हो गई। इसी समय जमालपुर और बरेली जैसे रेलवे शहर भी अस्तित्व में आये।

fp= 2 & jsyos 'kgj dk fp=

पश्चिम यूरोप के ज्यादातर देशों में आधुनिक शहरों का उदय औद्योगिकीकरण के साथ जुड़ा था। ब्रिटेन में मैनचेस्टर, लीवरपुल, लीड्स जैसे औद्योगिक शहरों का उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी में तेजी से विस्तार हुआ। ये शहर सूती वस्त्र एवं इस्पात उत्पादन के प्रमुख केन्द्र थे। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप लोग रोजगार की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर आने लगे। बड़े–बड़े कृषि फार्मों की स्थापना के कारण छोटे किसानों को गाँव छोड़कर काम की तलाश में कारखानों में आना पड़ा जिससे औद्योगिक केन्द्रों की आबादी बढ़ने लगी। औद्योगिक केन्द्रों के आस–पास नये नगरों का विकास हुआ। जहाँ इंग्लैंड में 1700 ई० में 77% लोग गाँवों में बसते थे, वहाँ 1900 ई० में केवल 20% लोग गाँवों में रह रहे थे और 80% लोग शहरों में रहने लगे। इस तरह तीव्र गति से जनसंख्या का शहरीकरण हुआ। गाँवों के उजड़ने एवं नये शहरों के बसने से अर्थव्यवस्था का आधार ही बदल गया। पहले गाँव ही अर्थव्यवस्था के आधार थे। अब औद्योगिक क्रांति के कारण शहर अर्थव्यवस्था के आधार बन गये। लेकिन भारत में शहरों का विस्तार यूरोपीय देशों की तरह तेजी से नहीं हुआ, क्योंकि भारत में पक्षपातपूर्ण औपनिवेशिक नीतियों ने हमारे औद्योगिक विकास को आगे नहीं बढ़ने दिया। फिर भी कानपुर और जमशेदपुर सही मायनों में औद्योगिक शहर थे।

कानपुर में सूती एवं ऊनी कपड़े तथा चमड़े की वस्तुएँ बनती थीं, जबकि जमशेदपुर स्टील उत्पादन के लिए विख्यात हुआ।

ifIMsIh 'kgj dh clkoV

अठारहवीं सदी के मध्य तक कलकत्ता, बंबई और मद्रास तेजी से विशाल शहर बन गए। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपने कारखाने (वाणिज्यिक कार्यालय) इन्हीं शहरों में बनाए। ये कारखाने कम्पनी के व्यापारिक वस्तुओं के संग्रह केन्द्र के रूप में कार्य करते थे। यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण इनकी किलेबंदी की जाती थी। मद्रास में फोर्ट सेंट जार्ज, कलकत्ता में फोर्ट विलियम और बम्बई में फोर्ट, ये इलाके ब्रिटिश आबादी के रूप में जाने जाते थे। यूरोपीय व्यापारियों से लेन–देन करने वाले भारतीय व्यापारी, करीगर और कामगार इन किलों के बाहर अलग इलाकों में रहते थे। इन इलाकों को 'ह्वाइट टाउन' (गोरा शहर) और 'ब्लैक टाउन' (काला शहर) के नाम से संबोधित किया जाता था।

fp= 3 & QkVZ lsV tkt]enkl dk uD'kk
QkVZ lsV tktZ ds bnZ&fxnZ cuk OgkbV Vkmu ck,a fljs ij rFkk
iqjkuk Cysd Vkmu nkfguh fljs ij gSA QkVZ lsV tktZ ?kjs esa
fLFkr gSA /;ku ls nsf[k,] fd Cysd Vkmu dks fdl rjg cla;k
x;k FkkA uhps Cysd Vkmu dk ,d fgLlkA

vkifuosf'kd 'kgj] e/;dkyhu 'kgj ls fdl izdkj fHkUu Fks\ d{kk esa ppkZ djsaA

'kgjh thou vkSj lkekftd ifjos'k

शहरों में सम्पन्नता एवं गरीबी दोनों साथ–साथ दिखाई देते थे। जिंदगी हमेशा

दौड़ती–भागती सी दिखाई देती थी। टाउन हॉल, सार्वजनिक पार्क, रंगशालाओं और सिनेमाघरों जैसे सार्वजनिक स्थानों के बनाने से शहरों में लोगों को मिलने–जुलने की नई जगह और अवसर मिलने लगे थे। सभी वर्ग के लोग शहरों में आने लगे। क्लर्कों, शिक्षकों, वकीलों, डॉक्टरों, इंजीनियरों की मांग बढ़ती जा रही थी। फलस्वरूप, शहरों में मध्यवर्ग के लोगों की संख्या बढ़ती गयी। स्कूल, कॉलेज और पुस्तकालय जैसे नए शिक्षण संस्थानों के खुलने से उनके बीच नये विचारों का प्रसार हुआ। शिक्षित होने के नाते वे समाज और सरकार के बारे में अखबारों, पत्रिकाओं और सार्वजनिक सभाओं में अपने विचार व्यक्त कर सकते थे। बहस और चर्चा का एक नया सार्वजनिक दायरा पैदा हुआ।

शहरों में महिलाओं के लिए भी नए अवसर थे। घर की चारदीवारी से बाहर सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की उपस्थिति बढ़ने लगी। वे शिक्षिका, रंगकर्मी, फिल्म कलाकार, फैक्ट्री मजदूर, नौकरानी के रूप में शहर के नए व्यवसायों में दाखिल होने लगी।

शहरों में मेहनतकश गरीबों एवं कामगारों का एक नया वर्ग उभर रहा था। ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब रोजगार की तलाश में शहरों की ओर आ रहे थे। मजदूर वर्ग के लोग अपने यूरोपीय और भारतीय मालिकों के लिए खानसामा (भोजन बनाने वाले), गाड़ीवान, चौकीदार, निर्माण मजदूर के रूप में विभिन्न प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध कराते थे। वे शहर के विभिन्न इलाकों में कच्ची झोपड़ियों में रहते थे।

vrhr d vkbu e Hkkxyi|j 'kgj

बिहार के भागलपुर शहर का अस्तित्व गंगा नदी के दक्षिण किनारे पर लगभग 3000 साल से कायम है। इसकी पहचान हमेशा से एक व्यावसायिक और सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में रही है। प्राचीन काल में शहर का अस्तित्व एक उपनगर के रूप में था जो अंगदेश की राजधानी चम्पा से सटा था। लेकिन समय का तकाजा देखिए, अब चम्पा ही उपनगर बनकर चम्पानगर हो गई और भागलपुर ही शहर का मुख्य केन्द्र बन चुका है।

बारहवीं सदी से अठारहवीं सदी के मध्य इस शहर पर मुसलमानों का शासन था। इस दौर में भागलपुर शहर सूफी संस्कृति का एक अहम केन्द्र हुआ करता था। यहाँ दर्जनों

मस्जिद, दरगाह, मजार, खानकाह, ईदगाह और इमामबाड़े थे। आधुनिक भागलपुर शहर में घूमने पर इन केन्द्रों के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं।

efLtn%& e|lyeku le|nk; dk mikluk LFkyA

etkj %& fdlh J"B 0;fDr ;k lar dh dc vFkok r nQu djus dk LFkku

edcjk %& dc ;k etkj ij cukbZ xbZ HkO; bekjrA

[kkudkg %& lQh lrk d /kkfed dUnA

bnxkg %& e|lyekuk d bn dh uekt i<u d fy, fo'k"k LFky tk
lkekU;r% [kqys eSnku d :i e gkrk gSA

bekeckMk %&f'k;k efLye le|nk; d /kkfed LFky] tgk egjZe e 'kkd
lHkk ¼etfyl½ dk vk;kstu gkrk gSA

घने मुहल्लों और दर्जनों बाजार से घिरा भागलपुर एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक शहरी केन्द्र था। शायरी एवं नृत्य संगीत आमतौर पर मनोरंजन के साधन थे। इस शहर में ऐशो–आराम सिर्फ कुछ अमीर लोगों के हिस्से में आते थे। अमीर और गरीब के बीच फासला बहुत गहरा था।

fp= 4 & Ekkykukpd dh efLtn e uekt vnk djr J)ky|
¼exy ckn'kkg tgkxhj ,o Q:[kl h;j d 'kkludky e fufer Hkkxyi|j jyo LV'ku l djhc 50 ehVj if'pe&nf{k.k rkrkjii|j e fLFkrA gtjr egEen lkgc d ifo= vo'k"k lqjf{kr gku d dkj.k ;g e|lyekuk dh ifo= /ke LFkyh gA bl ekgYy e ,d enjlk Fkk vkj ;gk l f'k{kk ikdj fo}ku ekyoh g,A bl h dkj.k bldk uke Ekkykukpd iMk½

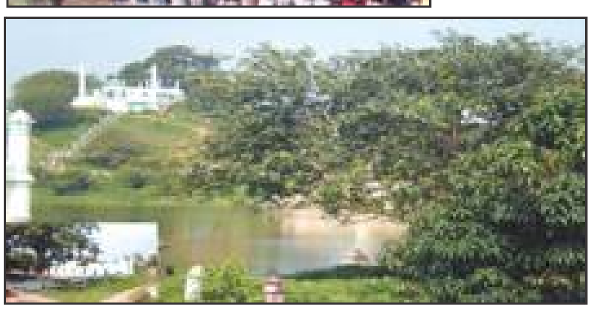

fp= 5 & 'kkg tx h dk edcjk
¼'kkg txh dk edcjk Hkkxyi|j jyo&LV'ku l djhc l djhc nk fdykehVj if'pe&nf{k.k dh vkj Åp Vhy ij fLFkr g vkj uhp rkykc ,o efLtn gA;gk ifrolk egjle dk eyk yxrk gA rkft;k dk igyke ¼fol tu½ bl h LFkku ij fd;k tkrk gA½

vkSifuosf'kd dky esa Hkkxyiqj 'kgj

हम औपनिवेशिक शहरों के बारे में पीछे अध्ययन कर चुके हैं। भागलपुर शहर के हालात दूसरे औपनिवेशिक शहरों से काफी अलग थे। यह शहर परंपरागत भारतीय शहरों जैसा था। यह शहर तीन कस्बों– चम्पा, भागलपुर और बरारी को मिलाकर विकसित हुआ था। जब भागलपुर नगरपालिका की स्थापना हुई, तो पहले दो कस्बे– चम्पा और भागलपुर इसमें शामिल किये गये। बाद में बरारी भी सम्मिलित हुआ और आज तीनों कस्बे भागलपुर नगरपालिका के अंतर्गत हैं। शहर के बीच से गुजरने वाली आड़ी टेढ़ी संकरी गलियों में अलग–अलग जाति, धर्म, भाषा और पेशे के लोगों के मुहल्ले थे। अलग–अलग समय में विविध प्रकार के आर्थिक कार्य करने वाले कई समुदाय भागलपुर शहर में आये और यहीं बस गये।

उन्नीसवीं सदी में आधुनिक शिक्षा के प्रसार, भू–राजस्व व्यवस्था एवं व्यवसायों के नये अवसर का नतीजा यह हुआ कि भागलपुर शहर में बांग्ला भाषियों और मारवाड़ी समुदाय का आगमन हुआ। शहर की आबादी बढ़ गई, रोजगार बदल गए और शहर की संस्कृति बिल्कुल भिन्न हो गई। भोजन पहनावे, कला और साहित्य के हर क्षेत्र में मुख्य रूप से उर्दू–फारसी पर आधारित शहरी संस्कृति नई रूचियों के नीचे दब गई।

शिक्षा के क्षेत्र मे अंग्रेजों के प्रयास का लाभ सबसे पहले यहां के बांग्लाजनों ने उठाया। देखते–देखते एक समय ऐसा भी आया जब शहर में बंगाल से आये डाक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रोफेसर, क्लर्क, शिक्षक, लेखक, अधिकतर बंगाली ही हुआ करते थे। भागलपुर शहर का बूढ़नाथ, मंसूरगंज, आदमपुर, खंजरपुर का इलाका मुख्य रूप से बांग्ला भाषियों से पटा था। ये बांग्ला भद्रजन अपनी संस्कृति और साहित्य की छाप लेकर शहर में आये और बांग्ला परिवेश का निर्माण किया।

उन्नीसवीं सदी के मध्य में व्यापारिक लाभ के उद्देश्य से मारवाड़ी, अग्रवाल, जायसवाल बनिया आदि जातियां एक ताकतवर व्यावसायिक समूह के रूप में शहर में उपस्थित हुये। ये व्यापारी, एजेण्ट, बैंकर और महाजन होते थे और शहर के व्यवसाय पर इनका नियंत्रण था। मारवाड़ी टोला, खलीफा बाग, शुजागंज में मारवाड़ी, नया बाजार में अग्रवाल तथा मसूरगंज मुहल्ले में जयसवाल लोग निवास करते थे।

ब्राह्मण और कायस्थ स्थानीय ग्रामीण जातियाँ थीं जो अंग्रेजी शिक्षा का लाभ उठाकर सरकारी पदों पर काबिज हुये। ये लोग शहर के मुदीचक एवं खंजरपुर इलाके में अपना बसेरा बनाया। कुछ ब्राह्मणों एवं कायस्थों का संबंध जमींदार परिवारों से भी था।

शहर का दक्षिणी–पश्चिमी इलाका तातारपुर, कबीरपुर, मौलानाचक, शाहजंगी, हबीबपुर, हुसैनाबद आदि मुहल्ले में मुस्लिम व्यापारी, कारीगर, बुनकर, मजदूर रहते थे। अनेक मुस्लिम परिवारों का संबंध सूफी संतों के साथ था जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी वर्षों से इस शहर में निवास कर रहे थे।

भागलपुर शहर का नाथनगर और चम्पानगर मुहल्ले में परम्परागत व्यवसाय में विशिष्टता प्राप्त मुस्लिम जुलाहे और हिन्दु तांती जाति के बुनकर रहते थे। ये रेशमी कपड़े और धागे तैयार करने का काम करते थे।

1862 ई. में रेलवे की शुरुआत और शिक्षण संस्थाओं की स्थापना ने शहर की कायापलट कर दी। बहुसंख्यक लोग रोजगार, व्यावसाय, शिक्षा और अन्य सुविधाओं की उम्मीद में शहर की तरफ आ रहे थे। जैसे–जैसे भागलपुर की आबादी बढ़ने लगी, बरारी में नये लोगों ने बसना शुरू किया। रोजगार की तलाश में ग्रामीण इलाकों से आए मेहनतकश गरीब और कामगारों का एक नया वर्ग उभरा जो बरारी कस्बे में गंगा नदी के किनारे कालीघाट स्थित मायागंज इलाके की कच्ची झोपड़ियों में रहने लगे।

fp= 6 & Ekk;kxt bykd e xjhck dh >kiM iVVh

egk'k; M;k<h

fp= 7 & Ekgk'k; M;k<h

इस विशाल इमारत का निर्माण अठारहवीं सदी के अंतिम वर्षों में भागलपुर शहर के स्थानीय जमींदार महाशय वंश के परेशनाथ घोष ने गंगा नदी के किनारे चौकी नियामतपुर (चम्पानगर) में अपने निवास स्थान के लिए करवाया था। महाशय वंश के परिवार के सदस्य मुगल काल से भागलपुर परगना नामक प्रशासनिक इकाई में कानूनगो के पद पर कार्य करते आ रहे थे। जब 1765 ई० में अंग्रेजों ने मुगल बादशाह से दीवानी का अधिकार प्राप्त किया, तब इस परिवार के लोग भागलपुर परगना में दीवान के पद पर नियुक्त हुए। बाद में भागलपुर के जिला कलक्टर मि० चेयरमैन ने परेशनाथ घोष को शुजानगर टप्पा की जमीन्दारी की सनद (आदेश) प्रदान की।

ब्रिटिश शासन की भू–राजस्व नीति के परिणामस्वरूप अनेक जमींदार परिवारों का आगमन शहर में हुआ। दरअसल इनकी जमीन्दारी का क्षेत्र ग्रामीण इलाकों में हुआ करता था, लेकिन ये लोग शहर के विभिन्न इलाकों में निवास करते थे। महाशय वंश, बनेली, बरारी, अरूआरी जैसे बड़े जमींदारों के साथ छोटे–छोटे जमींदार भी शहर में मौजूद थे। इनकी जमींदारी का क्षेत्र भागलपुर, मुंगेर, बाँका, नवगछिया, पूर्णिया, आदि में था। शहर में मंदिरों, शिक्षण संस्थानों, चिकित्सालयों, अनाथालयों एवं परोपकारी कार्यों को संरक्षण प्रदान करने से इन लागों का वहां के समाज में उनकी शक्तिशाली स्थिति स्थापित होती थी।

इस प्रकार कई कस्बों को मिलाकर भागलपुर शहर दूर तक फैली अल्प सघन आबादी वाला शहर बन गया और भागलपुर के इर्द–गिर्द स्थित कस्बे इसके नए उपशहरी इलाके बन गए।

Hkkxyiqj] vkifuosf'kd 'kgj ls fHkUu ,d ijEijkxr 'kgj FkkA dSls\

0;olk;] 0;kikj vkj m|kx

हमने उपर देखा कि इस काल में बाहर से आये व्यावसायिक समुदाय के लोगों ने भागलपुर शहर को अपना व्यापारिक ठिकाना बनाया। रेलवे और गंगा नदी के किनारे बसे होने के कारण शहर की व्यापारिक गतिविधियों में और भी तेजी आई। नतीजा यह हुआ कि भागलपुर एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक शहर के रूप में विकसित होने लगा।

भागलपुर शहर में स्टेशन चौक से खलीफाबाग तक का इलाका राजस्थान से आये मारवाड़ी समुदाय का आवास क्षेत्र था। राजस्थानी परम्परा को दृष्टिगत रखते हुये मारवाड़ियों ने अपने घरों के बाहर दुकान खोलकर व्यावसायिक गतिविधि को प्रारंभ किया। मारवाड़ियों के साथ अन्य दूसरी जातियाँ और समुदाय–दर्जी, मोची, नीलगर–छीपा (रंगरेज) और विसाती मुसलमान भी आये।

राजस्थानी मोचियों की दुकान हड़ियापट्टी (शुजागंज बाजार से उत्तर दिशा) में थी। ये मोची चमड़े के ऊपर कशीदे का भी काम करते थे। इनके घर और दुकान एक ही जगह थे। इसी हड़ियापट्टी में मिट्टी के बर्तनों की दुकानें भी थीं। मिट्टी के बर्तन का काम मुख्य रूप से स्थानीय कुम्हार ही करते थे। हड़ियापट्टी से पूरब दिशा में नीलगर और छीपाओं ने शहर की कोतवाली के पास अपना बसेरा डाल रखा था। ये लोग कपड़ा रंगने का काम किया करते थे। यहीं विसाती के भी घर थे। ये विसाती कपड़ों पर गोटा किनारी और बेल बुटे का काम करते थे। महिलाएँ बँधेज की चुनरी और रंगने का काम करती थीं। लहेरी टोला, मस्जिद गली और तातारपुर में बसे मनियार लाट/लाह की चुड़ी बनाते थे। कचौड़ी गली में हलवाइयों की दुकानें थीं। सोनापट्टी (शुजागंज से पश्चिम दिशा) सुनारों का मुहल्ला था। इस व्यवसाय से संबद्ध लोग स्थानीय स्वर्णकार और राजस्थान से आये मारवाड़ी भी थे। गंगा नदी के किनारे स्थित मोहल्ले–गोलाघाट, सराय, मंसूरगंज (रेलवे स्टेशन से उत्तर दिशा) एवं मिरजान हाट (स्टेशन से दक्षिण दिशा) में अनाज के बड़े–बड़े गोदाम थे, जहाँ अनाज का थोक एवं खुदरा व्यापार होता था। मिरजान हाट से सटे गुरहट्टा में गुड़ का कारोबार होता था।

भागलपुर शहर के बड़े व्यापारियों में सर्वप्रथम मेसर्स भूदरमल चंडीप्रसाद का नाम आता है। ये राजस्थान से भागलपुर आए थे और इस परिवार को भागलपुर में निवास करते हुए दो सौ वर्षों से अधिक हो गये हैं। यह फर्म बैंकिंग, सोना–चांदी, गल्ला, तसर रेशम का व्यापार करता था। इसके अलावा मेसर्स बोहित राम रामचंद्र, मेसर्स शोभा राम जोरती राम, मेसर्स जयराम दास, हनुमान दास, मेसर्स जानकी दास बैजनाथ, मेसर्स जीवन राम रामचन्द्र आदि फर्म भागलपुर में थे। इन फर्मों में बैंकिंग, कम्पनियों के बिक्रय एजेंट, हड्डी के काम के अतिरिक्त सिल्क, सूती, ऊनी कपड़े, किराना, अनाज, तेल का थोक व्यापार होता था।

भागलपुर शहर का सबसे प्रसिद्ध उद्योग तसर सिल्क का कपड़ा तैयार करना था। यह व्यवसाय बहुत पुराने समय से चला आ रहा है। इसलिए इस शहर को सिल्क सिटी भी कहा जाता है। यहां 1810 में करीब 3275 करघे चल रहे थे। इस व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र चम्पानगर और नाथनगर मोहल्ला था। तसर का कोया बाँकुरा, संथाल परगना और गया से आता था। जगदीशपुर एवं पुरैनी के गाँवों में धागा तैयार करने का काम होता था। फिर धागा नाथनगर, चंपानगर के बुनकरों के घर पहुँचता था, जहाँ हथकरघे पर रेशम के कपड़े तैयार होते थे। पटवा, मोमीन, जुलाहा (सभी मुस्लिम), तांती (हिन्दू) जातियाँ प्रमुखतः इस पेशे में कार्यरत हैं। रेशम और सूत की मिलावट से 'बाफ्टा' तैयार किया जाता था। यहाँ का तैयार कपड़ा यूरोपीय देशों को भेजा जाता था, जहाँ इसकी बहुत मांग थी।

fp= 8 & Ikkojye ij dke djrk gvk cudj

ck¶Vk %& ck¶Vk ,d gh jx dk j'keh diM dk VdMk gkrk g] ftl cuu d ckn jxk tkrk gA bldk VdMk 20&22 gkFk yck ,o 1&1-5 gkFk pkMk gkrk FkkA]

Hkkxyij ,d 0;olkf;d 'kgj FkkA D;k vki bl fopkj l lger g

'kklu çcU/k

जब भारत में अंग्रेजी शासन स्थायी स्वरूप ग्रहण करने लगा तब अंग्रेजों ने अपनी सत्ता को मजबूत बनाने के लिए देश में एक नयी प्रशासनिक व्यवस्था की नींव डाली। उस समय प्रशासनिक इकाइयों के कार्यालय शहरों में अवस्थित होते थे। आइए, हम भागलपुर के शासन प्रबंध के माध्यम से अंग्रेजों द्वारा एक जिले में स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में जानें।

fp= 9 & Hkkxyiqj lekgj.kky;

1774 ई० में भागलपुर को जिला बनाया गया। जिले का सबसे बड़ा अधिकारी 'कलक्टर' कहलाता था। भागलपुर जिले का पहला कलक्टर ऑगस्थ्स क्लिवलैंड था। कलक्टर की सहायता के लिए जिले के सदर दफ्तर में डिप्टी कलक्टर, सब डिप्टी कलक्टर और असिस्टेंट कलक्टर होते थे। 1936 तक यह जिला चार सब डिविजनों (भागलपुर सदर, बाँका, मधेपुरा, सुपौल) में बँटा था। सब डिविजन का सबसे बड़ा अफसर सब डिविजनल अफसर (एस०डी०ओ०) कहलाता था।

fp= 10

जिले में न्याय विभाग का सबसे बड़ा अफसर डिस्ट्रिक्ट एवं सेशन जज (जिला एवं सत्र न्यायाधीश) कहलाता था। दीवानी मुकदमों में इनकी सहायता के लिए सबोर्डिनेट जज और मुंसिफ होते थे। फौजदारी मुकदमें में जिला मजिस्ट्रेट तथा डिप्टी एवं सब डिप्टी मजिस्ट्रेट इनकी सहायता करते थे।

जिले में पुलिस विभाग का सबसे बड़ा अफसर सुपरिंटेन्डेंट ऑफ पुलिस (एस०पी०) कहलाता था। उसके नीचे असिस्टेन्ट एवं डिप्टी सुपरिंटेन्डेंट रहते थे। पुलिस के काम के लिए जिले को 25 भागों में बाँटा गया था। यह भाग 'थाना' कहलाता था। स्वतंत्रता के समय तक भागलपुर शहर के अंदर तीन थाने थे– भागलपुर शहर, भागलपुर मुफस्सिल और नाथ नगर। थाने का बड़ा अफसर इंसपेक्टर या सब इंसपेक्टर होता था, जिसे दरोगा भी कहा जाता था।

uxjikfydk

10 वर्ग मील क्षेत्र में विस्तृत भागलपुर शहर के नगरपालिका की स्थापना 1864 ई. में हुई थी। जनसाधारण द्वारा निर्वाचित एवं सरकार द्वारा मनोनीत प्रतिनिधियों के द्वारा इसका प्रबंधन होता था। नगरपालिका में 22 सदस्य होते थे, जिनमें 7 सदस्य मनोनीत और 14 निर्वाचित होते थे। अपनी सीमा क्षेत्र में शहर की सफाई, सड़क, पुल, पेयजल, शिक्षा, स्वास्थ्य की जवाबदेही नगरपालिका के जिम्मे था। शहर में पीने के पानी के आभाव को दूर करने के लिए भागलपुर नगरपालिका द्वारा 1887 ई. में एक जलागार का निर्माण किया गया। 1896–97 ई. में इसका विस्तार चम्पानगर एवं नाथनगर की ओर किया गया। जलागार को बड़ा बनाने के लिए सरकार ने नगरपालिका को 3 लाख रुपये कर्ज दिये थे। 1936–37 ई. में नगरपालिका की कुल सालाना आय 4.5 लाख रुपये थी। भागलपुर नगरपालिका क्षेत्र के अंतर्गत शहर की कुल आबादी 1872 ई. में 65,377 थी जो 1931 ई. में 83,847 हो गयी।

fp= 11 & Hkkxyiqj uxjikfydk

'k{kf.kd fojklr

भागलपुर शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र था। विभिन्न काल खंडों से गुजरते हुये भागलपुर ने अपनी शैक्षणिक पहचान को कायम रखा है। प्राचीन काल में अंतीचक (भागलपुर के नजदीक) का विक्रमशीला विश्वविद्यालय था तो मध्यकाल में मौलानाचक का खानकाह शहबाजिया हुआ करता था। ब्रिटिश काल में प्राथमिक शिक्षा, हायर सेकेण्डरी शिक्षा और

उच्च शिक्षा के प्रचार–प्रसार में यहाँ के जमींदार, बंगाली, मारवाड़ी, ईसाई समुदाय की अहम भूमिका रही है। इनके द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थान आज भी यहाँ की शैक्षणिक विरासत को जिंदा रखे हुये हैं। सरकारी स्तर पर 1837 ई. में जिला स्कूल शुरू किया गया। मारवाड़ी कन्या पाठशाला, बाल संबोधिनी स्कूल मारवाड़ियों की देन थी। चर्च मिशनरी सोसायटी (सी.एम.एस.) द्वारा आदमपुर में प्राथमिक एवं हाई स्कूल (1854) एवं चम्पानगर में अल्पसंख्यक मध्य विद्यालय का संचालन किया जाता था। माणिक सरकार स्थित दुर्गाचरण प्राइमरी स्कूल (1860 ई.) व हाई स्कूल (1937 ई.) बंगाली समुदाय के योगदान की दास्तान सुना रहे हैं। इसी दुर्गाचरण प्राइमरी स्कूल में सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने आरंभिक शिक्षा हासिल की थी।

fp= 12 & lh-,e-,l- gkbZ Ldwy

शहर के स्थानीय जमींदार तेजनारायण सिंह ने 1883 ई. में तेजनारायण जुबली कॉलेजियट हाई स्कूल तथा 1887 ई. में तेजनारायण जुबली कॉलेज की स्थापना की थी। दोनों ही संस्थान नया बाजार मोहल्ले में चला करते थे। बाद में बनैली स्टेट द्वारा दानस्वरूप भूमि एवं धन दिये जाने के बाद इन संस्थानों के नाम के साथ बनैली शब्द जुड़ गया। आज भी शहर में शिक्षा के क्षेत्र में इसकी पहचान है। वाणिज्य शिक्षा की मांग को देखते हुये शहर के मारवाड़ी समुदाय द्वारा 1941 ई. में मारवाड़ी कॉलेज की स्थापना की गई।

fp= 13 & Vh-,u-ch- dkWyst

भागलपुर में महिला शिक्षा की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। श्री अरविन्द घोष के पिता श्री कृष्णाधन घोष ने मोक्षदा बालिका विद्यालय की स्थापना 1868 ई. में की। 1868 ई. में ही जनाना मिशन स्कूल भी खोला गया। महिला उच्च शिक्षा के लिए मोक्षदा

बालिका विद्यालय परिसर में 15 अगस्त 1949 ई. को महिला महाविद्यालय की बुनियाद डाली गई। बाद में बरारी के जमींदार नरेश मोहन ठाकुर ने दान में खंजरपुर मोहल्ले में इस महाविद्यालय के लिए जमीन उपलब्ध कराई। इसलिए उनकी माँ के नाम पर इस महाविद्यालय का नामकरण सुंदरवती महिला महाविद्यालय हुआ।

तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में 1910 ई. में सबौर स्थित बिहार कृषि कॉलेज की नींव तत्कालीन गवर्नर सर एंड्रयू फ्रेजर ने रखी थी। इस कॉलेज की गिनती एशिया के महत्वपूर्ण कॉलेजों में हुआ करती थी। इससे कृषि शिक्षा के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित हुये। रोजगारपरक शिक्षा के लिए 1947–51 में सिल्क इंस्टीट्यूट नाथ नगर में शुरू किया गया।

fp= 14 & fcgkj df"k dkyst lckSj] Hkkxyiqj

यहां शिक्षा के प्रसार में पुस्तकालयों का अहम योगदान था। सबौर स्थित बिहार कृषि कॉलेज, तेजनारायण बनैली कॉलेज (टी.एन.बी. कॉलेज), भागलपुर कलेक्ट्रेट (समाहरणालय), भगवान पुस्तकालय, सरस्वती पुस्तकालय, बांग्ला इंस्टीच्यूट में पुस्तकों का अच्छा संग्रह था।

fp= 15 & Hkxoku iqLrdky;
Hkxoku iqLrdky; Hkkxyiqj LVs'ku Lks yxHkx ,d fdykehVj mRrj xk'kkyk ds fudV u;k cktkj esa fLFkr ,d ifIyd iqLrdky; gSA ;gk Kku&foKku dh iqLrdsa ,oa i=&if=dk,a miyC/k gSA

IkLÑfrd xfrfof/k;k

स्वतंत्रता पूर्व भागलपुर की सांस्कृतिक विरासत भी कम महत्वपूर्ण नहीं रही है। इस परिदृश्य में भागलपुर की साहित्यिक व सांस्कृतिक यात्रा का विवरण अपने आप में दिलचस्प है। यदि हम भागलपुर की सांस्कृतिक गतिविधियों की बात करें तो शहर में अनेक नामीगिरामी साहित्यकारों, सांस्कृतिकर्मी, रंगकर्मी, शिल्पकारों, संगीतकारों एवं फोटोग्राफरों का जमघट लगता था।

Developed by: ABSOL www.absol.in

उस समय भागलपुर के साहित्य पर बंग्ला साहित्य का बहुत अधिक प्रभाव था। शरतचन्द्र चटर्जी, विभूति भूषण बंद्योपाध्याय, रविन्द्रनाथ टैगोर भागलपुर प्रवास कर चुके थे। लेकिन उस समय जिस साहित्यकार ने यहाँ लम्बे समय तक रह कर अपना लेखन जारी रखा था, वह थे बलाई चंद्र मुखर्जी। उन्हें लोग बनफूल के नाम से जानते हैं। भागलपुर के साहित्यकार व रंगकर्मी राधाकृष्ण सहाय ने उनकी कई रचनाओं का बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद किया। शरतचन्द्र ने कालजयी उपन्यास 'देवदास' विभूति भूषण बंद्योपाध्याय ने 'पथेर पंचाली' का सृजन भागलपुर में रह कर ही किया। यह भी कहा जाता है कि रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'गीताजंली' के कुछ अंशों को भागलपुर में रचा था, जिसे साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला था।

इस काल में भागलपुर में हिन्दी साहित्य भी रचा जा रहा था। डॉ. राधाकृष्ण ने भागलपुर में 'साहित्य गोष्ठी' नामक संस्था बनायी। शीघ्र ही यह उस समय में शहर की साहित्यक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। हिन्दी के जिन प्रमुख रचनाकारों ने भागलपुर का गौरव बढ़ाया वे हैं– डॉ. शिवनंदन प्रसाद (व्यंग्य), डॉ. शिवशंकर वर्मा (कथा लेखन), जनार्दन प्रसाद झा द्विज आदि।

भागलपुर का 'रंगमंचीय (नाटक) इतिहास कोई ज्यादा पुराना नहीं है। भागलपुर की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने के लिए शरतचन्द्र ने स्वयं कई नाटक लिखे थे और उन्हें मंचित किया गया था। पर वे नाटक भी आधुनिक रंगमंच के करीब नहीं थे। यहाँ सिर्फ थियेटर या जात्रा (नाटक) की परंपरा के अंतर्गत बंगाली समाज प्रमुख भूमिका निभाता था। अर्द्धेंदु बाबु नाम के एक व्यक्ति प्रत्येक साल कोलकता से भागलपुर आकर जात्रा का प्रदर्शन करते थे। उसी क्रम में एक बार पृथ्वी थियेटर भी भागलपुर आया था और उसने कई नाटक मंचित किये थे। वैसे शहर की परंपरा का पहला नाटक हरिकुंज लिखित 'बाबरी मीरा' था जिसे हरिकुंज ने खुद निर्देशित किया था। लेकिन रंगमंचीय आंदोलन के रूप में जिसने भागलपुर के दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचा था, वह संस्था थी– अभिनय भारती।

gfjdqat %& Hkkxyiqj 'kgj dk lkaLÑfrd eh

1938 ई. में हरिकुंज ने भागलपुर शहर में सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए चरण संस्थाओं की नींव डालने में विशेष भूमिका निभाई। यह संस्थाएँ हैं– हिन्दी जात्रा पार्टी, श्री गौरांग संकीर्तन समिति, बागगिश्वरी संगीतालय व चित्रशाला। चित्रशाला में उस समय के प्रसिद्ध साहित्यकारों, रंगकर्मियों, शिल्पकारों, नृत्यकारों, संगीतकारों, फोटोग्राफरों का जमघट लगता था। इस जमघट में कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु, राष्ट्रकवि गोपाल सिंह नेपाली, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, साहित्यकार डॉ. बेचन, लघुकथाकार बनफूल, भारतरत्न बिस्मिल्लाह खां, नृत्यांगना सितारा देवी, सिने अभिनेता अशोक कुमार जैसी हस्तियाँ शामिल होती थीं।

/kkfeZd LFky

भागलपुर शहर में गंगा नदी के दक्षिणी तट पर बुढ़ानाथ मोहल्ला में बाबा बुढ़ानाथ महादेव मंदिर हिन्दुओं का प्रसिद्ध उपासना स्थल है। (चित्र पर नजर डालिए) इस मंदिर का निर्माण शंकरपुर के जमीनदार लक्ष्मी नारायण सिंह ने करवाया था। बाबू मोहन साह एवं बाबू रामकृष्ण भगत ने मंदिर परिसर में दो धर्मशालाएँ बनवाई थीं। जहाँ यात्रियों को ठहरने की अच्छी व्यवस्था थी। यहाँ चैत्र एवं आश्विन नवरात्र में विशेष उत्सव होता है जिसमें हिन्दु श्रद्धालु बड़ी संख्या में भाग लेते थे।

fp= 16& cq<kukFk egknso efnj

जैन धर्म के बारहवें तीर्थंकर बासुपूज्य की जन्मभूमि होने के कारण भागलपुर शहर जैनियों की पवित्र भूमि मानी जाती है। शहर के नाथनगर मोहल्ला में दिगम्बर जैन मंदिर एवं

चम्पानगर में श्वेताम्बर जैन मंदिर जैनियों की पूज्य स्थल हैं। हराबव राज्य के जमीन्दार धनपत सिंह ने तीर्थयात्रियों के ठहरने की सुविधा का ख्याल करते हुए श्वेताम्बर धर्मशाला का निर्माण करके बड़ी उदारता का परिचय दिया था। मारवाड़ी मोहल्ला में जैनियों के अनेक मंदिर हैं।

fp= 17 & ukFkuxj fLFkr fnxcj tSu efnj

सिक्ख सम्प्रदाय का उपासना स्थल नया बाजार एवं खालीफा बाग मोहल्ला में स्थित हैं। ईसाइयों ने 1845 ई.में घंटाघर के निकट तथा 1854 ई. में कर्णगढ़ में गिरजाघर का निर्माण किया था।

fp= 18 & ?kVk?kj d s ikl fLFkr fxjtk?kj

I koZtfud Hkou

यदि आप भागलपुर की इमारतों पर एक नजर डालें तो उन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– उन्नीसवीं सदी से पहले निर्मित किले, महल, मंदिर, मस्जिद, मकबरा तथा उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी में निर्मित सरकारी दफ्तर टाउन हॉल, सार्वजनिक अस्पताल, रेलवे स्टेशन, घंटाघर चर्च क्लब, स्कूल, कॉलेज आदि। ये भवन लोगों की रूचि के साथ–साथ शासकों एवं स्थानीय जमीन्दारों की पंसद और इच्छाओं को दर्शाते हैं। इन विशाल इमारतों का निर्माण पहली बार इस्तेमाल में लगाये गए लोहे और सीमेंट के कारण संभव हो पाया। पहले की इमारातें बिल्कुल सादी होती थीं। बाद में अंग्रेजों ने हिन्दू और इस्लामिक स्थापत्य (भवन निर्माण की तकनीक) के मिश्रण से कुछ खूबसूरत भवन बनवाएँ। उन्होंने कुछ प्राचीन भवनों की नकल करने पर भी विचार किया। यदि आप ऐसी कुछ पुरानी इमारतों को ध्यान से देखें तो उनमें यूरोपीय और भारतीय स्थापत्य का बड़ा ही रोचक तालमेल नजर आएगा। भवन निर्माण कला के कुछ रोचक शैलियों का अध्ययन इकाई 11 में करेंगे। आइए, हम भागलपुर शहर की सैर करते हुये भवनों एवं इमारतों का अवलोकन करें।

भागलपुर शहर का हृदय स्थल और भारत के पुराने रेलवे स्टेशन में से एक भागलपुर रेलवे स्टेशन, शहर का मुख्य व्यापारिक स्थान है। यहाँ ई० आई० आर० (ईस्ट इंडियन रेलवे) एवं बी०एन०डब्लू०आर० (बंगाल नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे) के स्टेशन हैं। इसकी शुरुआत 1862 ई० में हुई थी। इसके कारण आम लोगों के जीवन में बड़ा बदलाव आया। व्यापारी अपने कारोबार के लिए, श्रद्धालू तीर्थ यात्रा के लिए, अधिकारी अपने काम के लिए और अन्य लोग रोजगार की तलाश में यात्रा करते थे। लोग यातायात के इस नये साधन से लाभान्वित थे।

भागलपुर रेलवे स्टेशन से लगभग 3 किलोमीटर उत्तर गंगा नदी के किनारे स्थित क्लिवलैंड हाउस की गणना विशाल एवं सुंदर इमारतों में की जाती है। इसका निर्माण भागलपुर के पहले जिला कलक्टर क्लिवलैंड द्वारा 1780–1783 ई० के मध्य करवाया गया था। इटालियन शैली में निर्मित यह इमारत एक ऊँचे टीले पर बना है। पहले यहाँ शहर के स्थानीय जमीनदार महाशय वंश के परेशनाथ घोष का निवास स्थान था। क्लिवलैंड ने महाशय परिवार को चौकी नियामतपुर में 84 बीघा जमीन देकर इसे अपने अधीन कर लिया और अपना निवास स्थान बनाया। बाद में यह विशाल भवन टैगोर परिवार के हाथ चली गई। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसे अपना अध्ययन स्थल बनाया और गीतांजली के कुछ अंश यहाँ लिखे। बाद में उन्हीं के नाम पर इस इमारत को रवीन्द्र भवन के नाम से जाना जाता है। वर्त्तमान समय में रवीन्द्र भवन में तिलकामांझी विश्वविद्यालय भागलपुर का 'इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग और क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र'

fp= 19 & Hkkxyiqj jsyos LVs'ku

fp= 20 & fDyoySaM gkml

अपनी कक्षाएँ आयोजित करता है।

19वीं सदी के आरंभ में समय देखने का यूरोपीय तरीका अंग्रेज शासित भारत में भी लागू किया गया। अब काम करने का यूरोपीय काल अवधि (सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक) भारत में भी अपना लिया गया था। लोग देर से आने के कोई बहाना नहीं बना सकें, इसके लिए सार्वजनिक स्थानों पर घंटाघर बनाए गए। इसमें चारों तरफ डायल होते थे ,ताकि लोग दूर से और किसी भी दिशा से घड़ी को देख सकें। यही नहीं, लोगों को समय की जानकारी देने के लिए इन घंटाघरों से निश्चित समय के बाद घंटे की आभास भी होती थी। भागलपुर शहर का घंटाघर चौक एक उदाहरण था।

fp= 21 & ?kVk?kj

भागलपुर रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर उत्तर लाजपत पार्क के निकट स्थित टाउन हॉल बीसवीं सदी के आरंभ में निर्मित भवन है जहाँ सार्वजनिक समारोहों का आयोजन किया जाता था।

fp= 22 & Vkmu gkWy

भागलपुर कचहरी परिसर के निकट स्वामी विवेकानन्द पथ पर स्थित सेंटीश कम्पाउंड मैदान एक सार्वजनिक पार्क था। इसका नामाकरण बनेली इस्टेट के मैनेजर टी. सेंटीश के नाम पर पड़ा। इस कम्पाउंड के भीतर अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारियों ने मनोरंजन एवं मौज–मस्ती के लिए स्टेशन क्लब का निर्माण किया। आप चित्र में क्लब की जर्जर स्थिति को देख सकते हैं।

fp= 23 & LV'ku Dyc] lsfVl dikmM

vki fdlh 'kgj d 'k{kf.kd] /kkfed] lkotfud ,o ljdkjh Hkou dh lph cuk, rFkk tkudkjh ikIr dj fd budk fuek.k dc gvk\ vki ;g crk, fd bldk mi;kx fdl dke d fy, fd;k tkrk g\

vH;kl

vkb; fQj l ;kn dj

1- lgh ;k xyr crk,&

(i) भागलपुर शहर का विकास औपनिवेशिक शहरों से भिन्न परंपरागत शहर के रूप में हुआ।

(ii) मुस्लिम काल में भागलपुर शहर सूफी संस्कृति का केन्द्र नहीं था।

(iii) उन्नीसवीं सदी में भागलपुर में बंगाली और मारवाड़ी समुदाय का आगमन हुआ।

(iv) भारत में आधुनिक शहरों का विकास औद्योगीकीकरण के साथ हुआ।

(v) प्रेसिडेंसी शहरों में 'गोरे' और 'काले' लोग अलग–अलग इलाकों में रहते थे।

2- fuEufyf[kr d tkM cuk,&

(क) प्रेसिडेंसी शहर	(क) बरेली, जमालपुर
(ख) रेलवे शहर	(ख) बम्बई, कलकत्ता, मद्रास
(ग) औद्योगिक शहर	(ग) कानपुर, जमशेदपुर

3- fjDr LFkkuk dk Hkj&

(क) भागलपुर नगरपालिका की स्थापना...ई० में हुई थी।

(ख) भागलपुर में सिल्क कपड़ा उत्पादन का केन्द्र..और ....था।

(ग) भागलपुर में सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले प्रमुख संस्कृतिकर्मी ....थे।

(घ) रेलवे स्टेशन कच्चे माल का..और आयातित वस्तुओं का ....था।

(ङ) कालजयी उपन्यास..की रचना शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने की थी।

vkb, fopkj djs&

(i) शहरीकरण का आशय क्या है?

(ii) अठारहवीं सदी में नये शहरी केन्द्रों के विकास की प्रक्रिया पर प्रकाश डालें?

(iii) ग्रामीण एवं शहरी अर्थव्यवस्था के अंतर को स्पष्ट करें?

(iv) भागलपुर शहर एक व्यावसायिक एवं सांस्कृतिक नगर था। कैसे?

(v) भागलपुर को सिल्क सिटी (रेशमी शहर) कहा जाता है। क्यों?

(vi) शहरों के सामाजिक परिवेश को समझाएं।

vkb, djds ns[ks

(i) आप अपने राज्य के किसी शहर के इतिहास का पता लगाएँ तथा शहर के फैलाव और आबादी के बसाव के बारे में बताएँ। साथ ही शहर में संचालित व्यावसायिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियों के विषय में जानकारी दें?